महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः
संस्कृतविभागः
M.A.& M.Phil./Ph.D. (Core Paper) in Sanskrit

पाठ्यशीर्षकम् – पाण्डुलिपिविज्ञानं-समीक्षात्मकग्रन्थसम्पादनञ्च
(Manuscriptology & Critical Text-editing)
पाठ्यकूटसङ्केतः – SNKT2005&SNKT5002

विषयः –ग्रन्थसम्पादनप्रक्रिया
Topic- (Process of Critical Editing)

अध्यापकः – डा. अनिलप्रतापगिरिः

समीक्षात्मक संपादन का उद्देश्य

1. पाठभेद निर्धारण

2. मूलपाठ का अन्वेषण

3.पांडुलिपि का सामान्य अध्ययन

समीक्षात्मक संपादन की उपादेयता

पांडुलिपियों का परिष्करण, परिमार्जन, शुद्धिकरण एवं मूल पांडुलिपि की प्राप्ति।

पांडुलिपि पर शोध कार्य, प्रकाशन,संरक्षण जिससे बौद्धिक संपदा का लाभ लोगों को हो सके।

संपादन के प्रकार

Lower Criticism - 1.To enhance External Nature of the Manuscripts	2. Mechanical	3.Physical study	4.Content is main
2. Higher Criticism- 1.To enhance Internal Nature of the Manuscripts.	2. Conceptual	3.Context is main	Note: Limited permission for higher criticism in Manusriptology

Methods of Critical Edition

1. पांडुलिपियों की तुलनात्मक समीक्षा द्वारा पाठभेद का निर्धारण।

2. पांडुलिपियों के वंशवृक्ष निर्माण द्वारा मूल पाठ का अन्वेषण।

समीक्षात्मक संपादन से दोष का निवारण

(Horizontal critical edition method)पांडुलिपियों के तुलनात्मक समीक्षा द्वारा पाठ भेद के दोष को दूर किया जाता है।

Vertical critical edition method)पांडुलिपियों के वंशवृक्ष-निर्माण के द्वारा मुख्य पांडुलिपि को प्राप्त किया जाता है।

संपादनगत दोष के प्रकार

- सामान्य दोष (General error)
- विशिष्ट दोष (Peculiar error)

सामान्य दोष

यह दोष दो या दो से अधिक पांडुलिपियों में एक समान रूप से प्राप्त होता है, जिससे पांडुलिपि के परिवार का ज्ञान होता है।

यह दोष पांडुलिपि के एक परिवार को दूसरे परिवार से अलग करने में सहायक होता है।

इस दोष के द्वारा वंशवृक्ष के निर्माण में सहायता मिलती है।

विशिष्ट दोष

यह दोष लिपिकार के द्वारा किया जाने वाला किसी पांडुलिपि विशेष का दोष होता है।

इस दोष के द्वारा पांडुलिपि के लिपिकारों में भेद प्राप्त होता है।

तुलनात्मक समीक्षा के द्वारा इस दोष को दूर किया जाता है जो मुख्य रूप से पाठभेद का कारण बनता है।

वंशवृक्ष निर्माण की प्रक्रिया

- यदि A,B,C तीन पांडुलिपियाँ प्राप्त हैं, तो उनके बीच में 22 प्रकार के सम्बंधों की संभावनाएं हैं- जिससे अधोलिखित प्रकार के वंशवृक्ष का निर्माण हो सकता है-

तीन पांडुलिपियों में संभावित संबंध

I/6	II/3	III/3	IV/6	V/1	VI/3

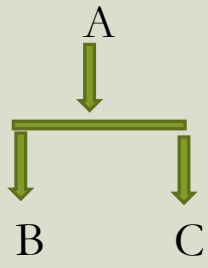

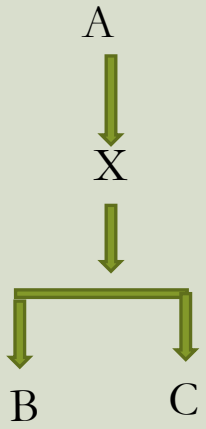

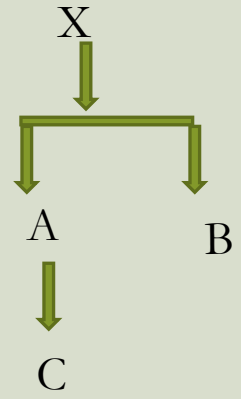

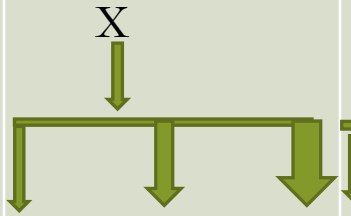

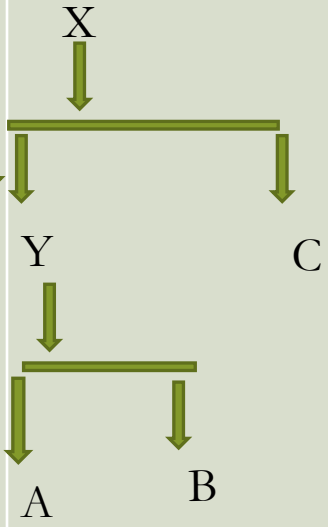

Type-1: प्रथम संरचना में यह दृष्टिगत होता है कि एक ही पांडुलिपि से अन्य दो पांडुलिपियाँ उत्पन्न हुई है। पाठभेद समीक्षा की दृष्टि से इन तीनों पांडुलिपियों में किसी एक पांडुलिपि को लिया जा सकता है, जो तीनों पांडुलिपियों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं।

Type-2: द्वितीय संरचना में यह दृष्टिगत होता है कि A पांडुलिपि से B एवं C पांडुलिपियां उत्पन्न हुई है।A की सारी त्रुटियां B एवं C में विद्यमान्, परंतु B और C की अपनी विशिष्ट त्रुटियां भी हैं जो बताती है कि B एवं C पांडुलिपियां दो भिन्न भिन्न लिपिकारों के द्वारा निर्मित की गई हैं जिनका समय भी भिन्न भिन्न हो सकता है।

Type-3: तृतीय संरचना से यह स्पष्ट होता है कि A पांडुलिपि से B एवं C पांडुलिपियाँ साक्षात उत्पन्न नहीं हुई है परंतु A पांडुलिपि की सारी त्रुटियां B एवं C पांडुलिपियों में विद्यमान् है तथा B एवं C पांडुलिपियों की अपनी भी विशिष्ट त्रुटियां है जो बताती हैं कि B एवं C पांडुलिपियां भिन्न भिन्न लिपिकारों के द्वारा A पांडुलिपि के ही किसी अन्य प्रतिलिपि से लिखी गई है।

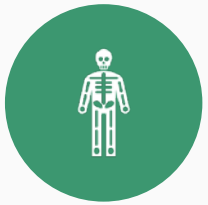

TYPE-IV: चौथी संरचना से यह ज्ञात होता है कि A एवं B पांडुलिपियों की मूल पांडुलिपि प्राप्त नहीं है । A एवं B पांडुलिपियों की कुछ अपनी विशिष्ट त्रुटियाँ हैं। C पांडुलिपि का उद्भव A से हुआ है A पांडुलिपि की सारी त्रुटियां C पांडुलिपि में प्राप्त होती हैं।

TYPE-V: पाचवी संरचना से यह ज्ञात होता है कि तीनों पांडुलिपियाँ अपने आप में विशिष्ट हैं जिनका उदभव किसी एक पांडुलिपि से हुआ है, जो प्राप्त नहीं है।

TYPE-VI: छठी संरचना से यह ज्ञात होता है कि तीनों पांडुलिपियां अपने आप में विशिष्ट हैं अप्राप्त X पांडुलिपि से अप्राप्त Y एवं प्राप्त C पांडुलिपियां उत्पन्न हुई जो अपने आप में विशिष्ट त्रुटियों से युक्त हैं। समीक्षात्मक संपादन के लिए इन तीनों पांडुलिपियों का अपना महत्व है।

वंशवृक्ष का आकलन

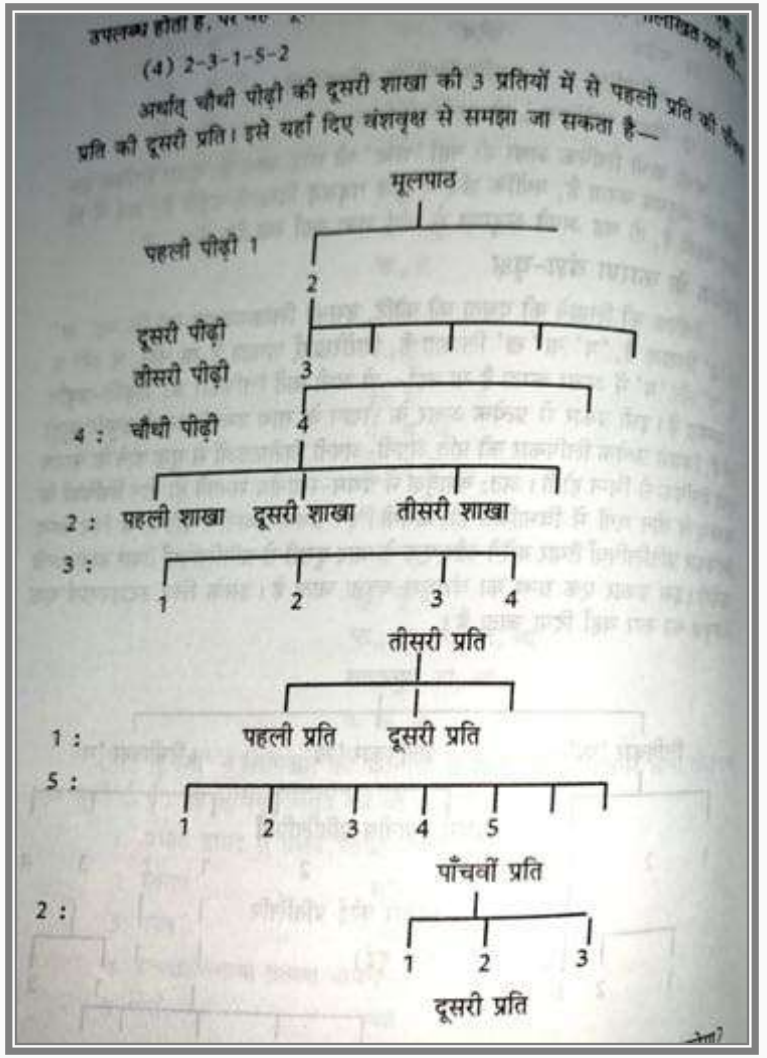
(4) 2-3-1-5-2
अर्थात् चौथी पीढ़ी की दूसरी शाखा की 3 प्रतियों में से पहली प्रति की
प्रति की दूसरी प्रति। इसे यहाँ दिए वंशवृक्ष से समझा जा सकता है—
मूलपाठ
पहली पीढ़ी 1
2
दूसरी पीढ़ी
तीसरी पीढ़ी
3
4 : चौथी पीढ़ी
4
2 : पहली शाखा दूसरी शाखा तीसरी शाखा
3 :
1 2 3 4
तीसरी प्रति
1 : पहली प्रति दूसरी प्रति
5 :
1 2 3 4 5
पाँचवीं प्रति
2 :
1 2 3
दूसरी प्रति

पांडुलिपियों में तुलना द्वारा वंशनिर्माण

यदि क और ख़ दो पांडुलिपियां है,क पांडुलिपि के सारे दोष ख में मिलते हैं परंतु ख में कुछ विशिष्ट दोष भी मिलते हैं जो क में नहीं हैं- इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ख पांडुलिपि क से उत्पन्न हुई है।

यदि क पांडुलिपि में भी ख पांडुलिपियों के सारे दोष हैं परंतु क में अपने कुछ विशिष्ट दोष भी प्राप्त हैं जो ख में नहीं हैं इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि क पांडुलिपि ख पांडुलिपि से उत्पन्न हुई है।

<u>वंशवृक्षनिर्माणस्य उदाहरणरूपेण एकस्याः पद्धतेः निरूपणम्</u>

यथा सुभाषितसङ्ग्रहः इति ग्रन्थस्य सप्तप्रतिलिपयः समुपलभ्यन्ते। एताः प्रतिलिपयः परस्परं प्रतिलिपयः न सन्ति। एतासु प्रतिलिपिषु पाठभेदाः अधोलिधिताः –

1. सन्तुष्टाश्च महीभृतः। (क तथा घ प्रतिलिप्योः पाठभेदः)
2. सन्तुष्टाः पृथिवीभूजः। (ख तथा छ प्रतिलिप्योः पाठभेदः)
3. सन्तुष्टाश्च महीपतिः। (ग तथा च प्रतिलिप्योः पाठभेदः)
4. सन्तुष्टाश्चैव पार्थिवः। (ङ प्रतिलिपेः पाठभेदः)

उपर्युक्तैः पाठभेदैः कल्पयते यत् क तथा घ अनुपलब्ध- A- प्रतिलिपेः प्रतिलिपी, ख तथा छ B-प्रतिलिपेः प्रतिलिपी, ग तथा च C -प्रतिलिपेः प्रतिलिपी। A,B,C प्रतिलिपयः अपि अनुमानिताः। अतएव एतासां मूलप्रतिः X भवितुं शक्यते। एतासां प्रतिलिपीनां वंशवृक्षः अधोलिखितः-

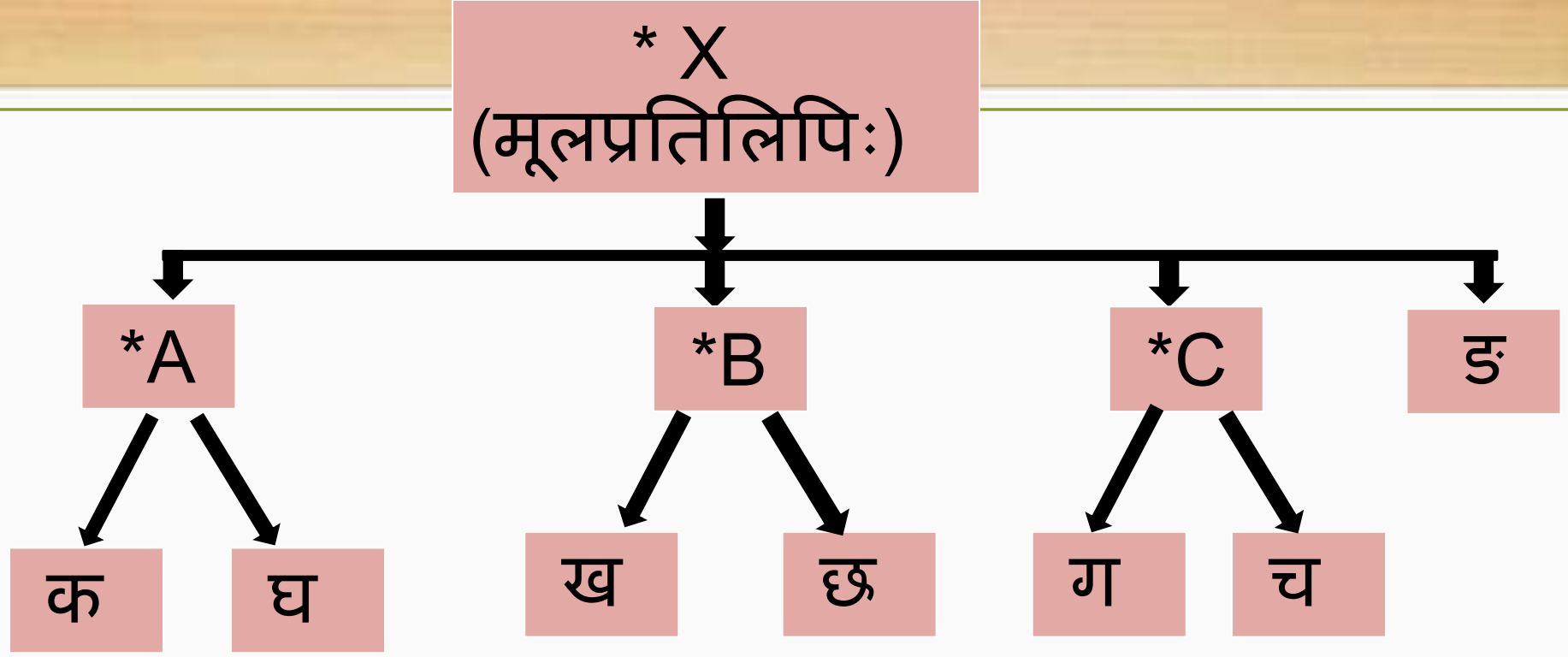

निर्देशः – *अनुमानिता प्रतिलिपिः

क तथा घ पांडुलिपियों के पाठ का मिलान करने पर A पांडुलिपि के पाठ का निर्धारण हो जाता है।ख एवं छ पांडुलिपियों के मिलान से B पाठ का निर्धारण हो जाता है। इसी तरह ग एवं च की तुलना करने पर C पाण्डुलिपि का निर्धारण हो जाता है । यदि A, B, C तथा ङ प्रतियों में एक समानता है, तो वह X पांडुलिपि का निर्धारण कर देती है।

परंतु A तथा ङ में भी पाठ समानता की संभावना हो सकती है, C एवं B में भी यदि पाठ की समानता दृष्टिगत हो तो इनका वंशवृक्ष का स्वरूप अधोलिखित प्रकार से होगा-

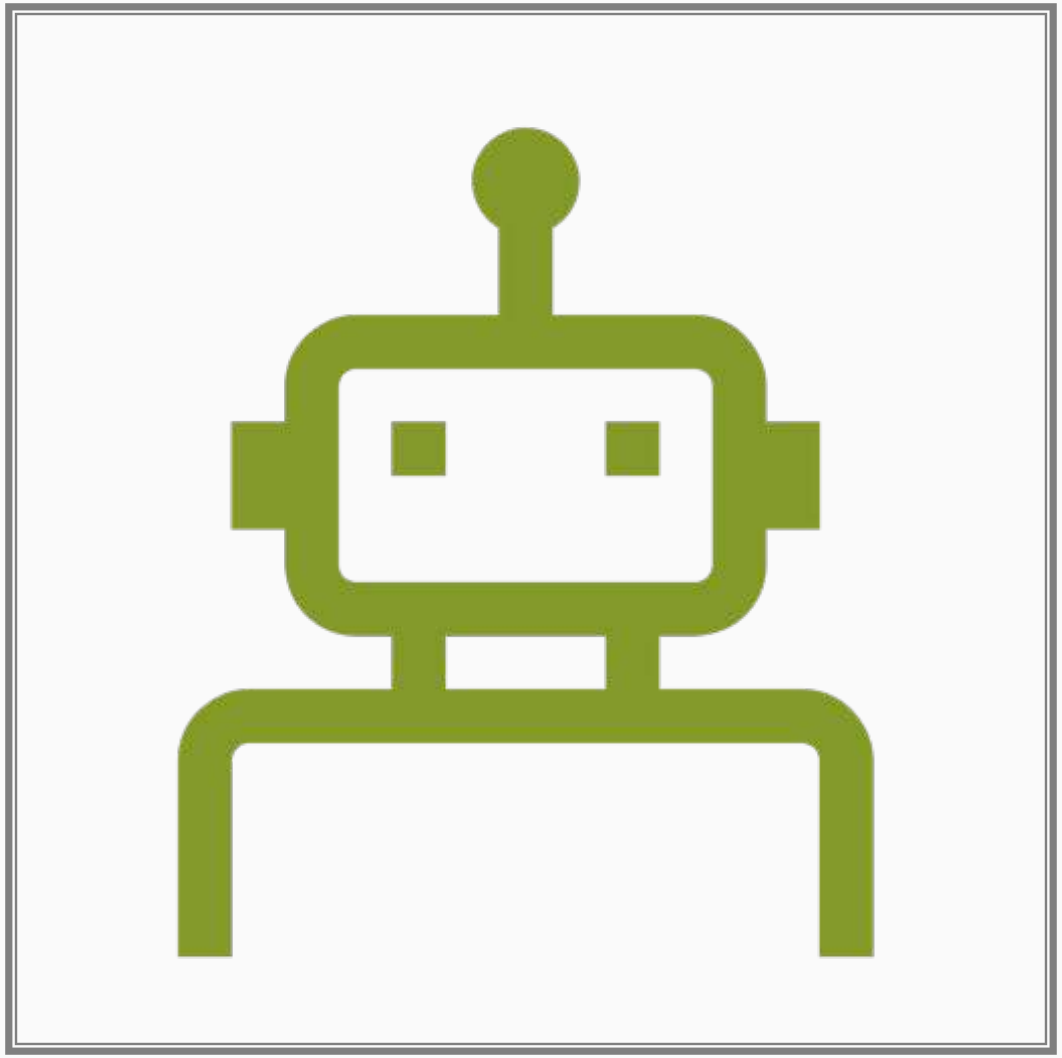

द्वितीय-अनुमानित वंशवृक्ष

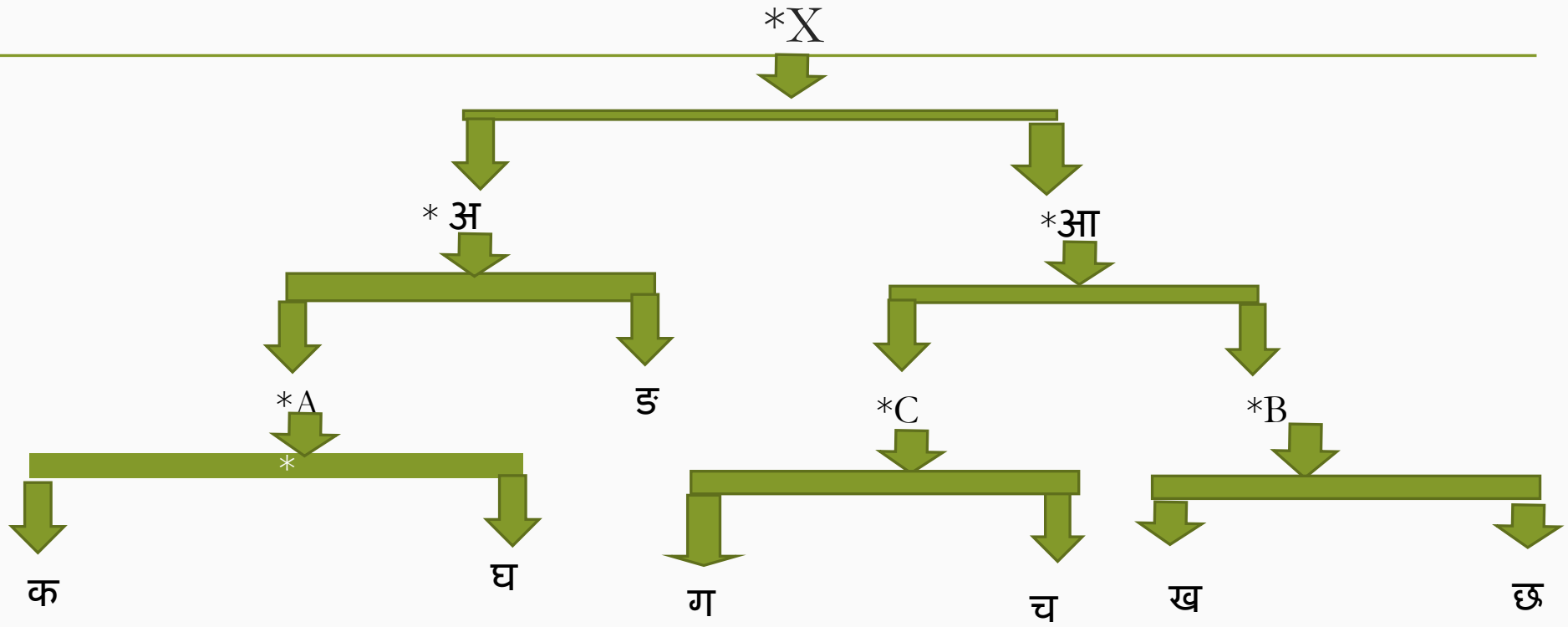

अनुमानित A तथा उपलब्ध ङ प्रतियों के पाठों को को मिलाने से अनुमानित अ पांडुलिपि के पाठ की प्राप्ति हो सकती है।

२. अनुमानित C तथा अनुमानित B पांडुलिपियों के पाठों के आधार पर अनुमानित आ पांडुलिपि के पाठ की प्राप्ति हो सकती है।

३. अ और आ पांडुलिपियों के पाठों की समीक्षा करने पर X पांडुलिपि का पाठ निर्धारण प्राप्त हो सकता है।।

तृतीय अनुमानित वंशवृक्ष

यदि किसी ग्रंथ पर आठ पांडुलिपियां प्राप्त हो, तो उनका वंशवृक्ष का स्वरूप अधोलिखित प्रकार से हो सकता है—

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज के अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि क, ख, ङ पांडुलिपियों की प्रतियों में प्रायः समानता है तथा घ,च,छ,ज में प्रायः समानता है।

यह निष्कर्ष निकलता है कि उक्त प्रतियों की आदर्श प्रति दो अलग अलग प्रतियाँ हो सकती हैं।

प्रथम अनुमानित आदर्श प्रति का स्वरूप

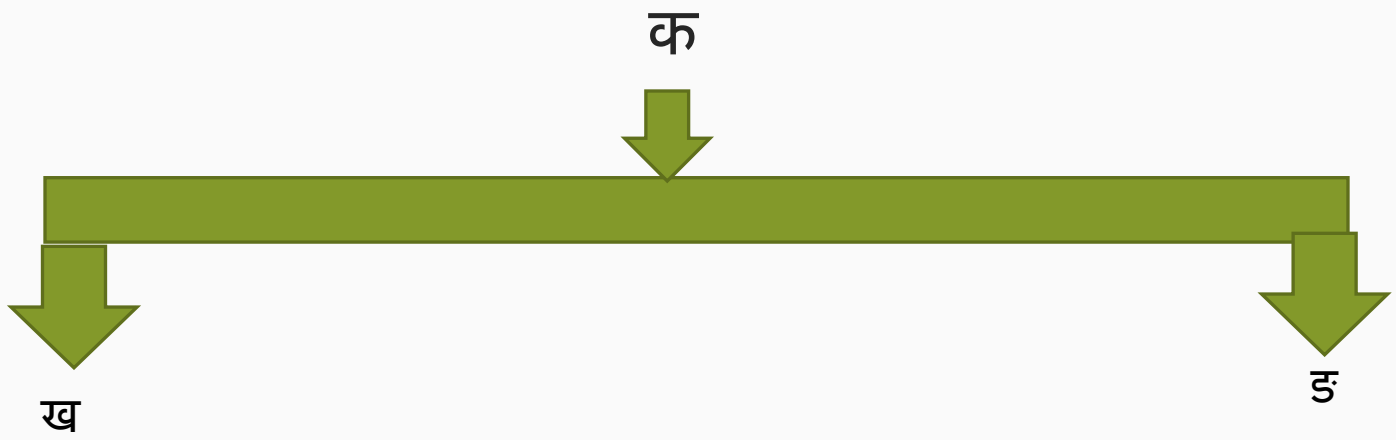

क, ख़ तथा ङ की प्रतियों से यह ज्ञात होता है कि क के सभी दोष ख तथा ङ में समान रूप से हैं तथा ख तथा ङ प्रतियों में कुछ विशिष्ट अपनी त्रुटियां भी हैं। इससे यह संभावना बनती है कि क पांडुलिपि से दो भिन्न लिपिकारों ने ख तथा ङ प्रतियो का निर्माण किया होगा।

द्वितीय अनुमानित आदर्श प्रति का स्वरूप

- 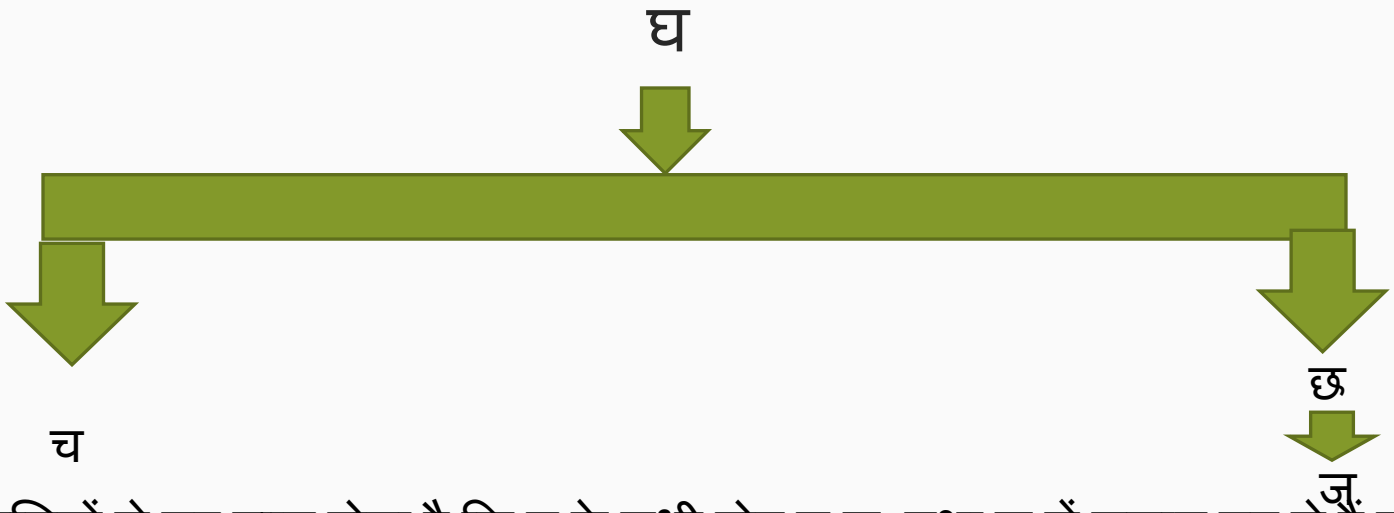

घ, च,छ तथा ज की प्रतियों से यह ज्ञात होता है कि घ के सभी दोष च,छ तथा ज में समान रूप से हैं तथा च तथा छ प्रतियों में कुछ विशिष्ट अपनी त्रुटियां भी हैं। इससे यह संभावना बनती है कि घ पांडुलिपि से दो भिन्न लिपिकारों नें च तथा छ प्रतियो का निर्माण किया होगा। ज में छ की त्रुटियों के साथ कुछ अपनी त्रुटिया हैं।ज का च के साथ संबद्ध होने का साक्ष्य नहीं प्राप्त है अतः ज प्रति छ से उत्पन्न हो सकती है।

तृतीय अनुमानित आदर्श प्रति का स्वरूप

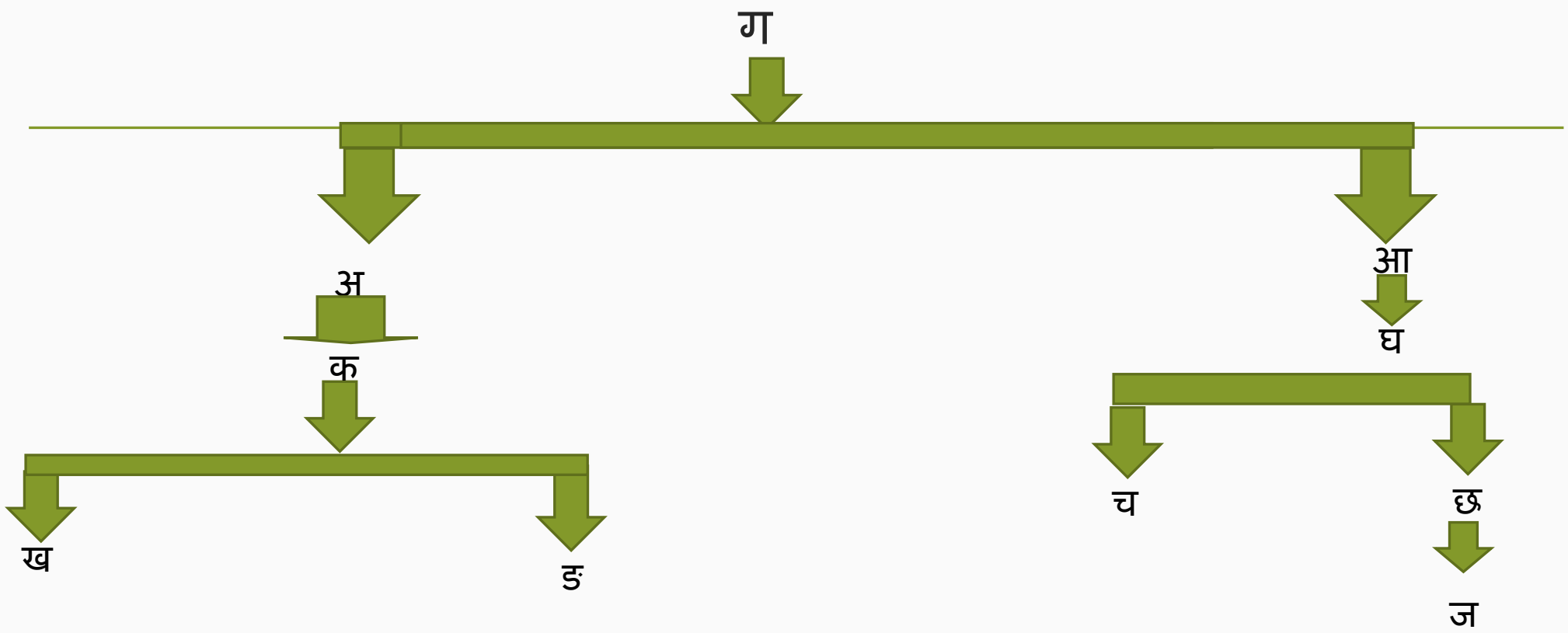

- १. प्रतिलिपि ग का पाठ सभी प्रतिलिपियों से अधिक शुद्ध दृष्टिगत होता है। ग पाठ की त्रुटियां सभी प्रतियों में समान रूप से हैं जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि क तथा घ प्रतियों का मूल स्रोत ग ही है। अन्य प्रतियों की तुलना में क तथा छ में प्राप्त त्रुटियां अधिक होने से निष्कर्ष निकलता है कि ये दोनों प्रतियां ग की दो भिन्न प्रतियों से उत्पन्न हुई हैं। वे काल्पनिक प्रतियाँ अ तथा आ हो सकती हैं।
- २. ख, ङ,च, छः तथा ज के पाठ और महत्वपूर्ण नहीं रह जाते हैं, क्योंकि इन पाठों से अधिक शुद्धपाठ ग पाठ में प्राप्त होते हैं।
- ३. क तथा घ के पाठ का महत्व केवल उन्हीं स्थलों पर है, जहाँ पर ग का पाठ किसी कारणवश अस्पष्ट है।

Recommended readings & References:

- Murthy,Srimannarayana,Methodology in Ideological Research, Delhi:Bharatiya Vidya Prakashan,1990.
- Murthy,R.S.Shivaganesh,Introduction to Manuscriptology,Sharada Publication House,Delhi-110035,1996.
- Katre,S.M.(with P.K.Gode),Introduction to Indain Textual riticism,Poona:Deccan College,1954.
- Thaker,Jayant P., Manuscriptology and Text Criticism, Oriental Institute, Baroda.
- Pandurangi,K.T.Wealth of Sanskrit Manuscripts in India & Abroad,Bangalore.
- Buhler G, Indian Paleography, Munshiram Manoharam lal, New Delhi.
- शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपि विज्ञान,अभिराज राजेन्द्र मिश्र,अक्षयवट प्रकाशन,इलाहाबाद ।
- पाण्डुलिपि विज्ञान,सत्येन्द्र,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर ।
- भारतीय पाण्डुलिपि विज्ञान,कुमुदिनी पाण्डेय,महावीर प्रेस,वाराणसी ।
- .भारतीय प्राचीन लिपिमाला,गौरीशङ्कर ओझा,मुन्शीराम मनोहरलाल,वाराणसी ।
- भारतीय पुरालिपि विद्या,दिनेश चन्द्र सरकार,विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली ।
- तत्त्वबोध(सम्पा.),दीप्ति त्रिपाठी, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, दिल्ली ।
- विश्व के प्राचीन संस्कृत अभिलेख,लक्ष्मी विलास पार्थसारथी,वाणीविलास प्रकाशन,ऋषिकेश ।
- संस्कृतशोधप्रविधिः(Methodology of Research in Sanskrit),डॉ.सत्यनारायण आचार्यः,श्रीमती सौदामिनी त्रिपाठी),प्रकाशिका,(पुरी,ओडिशा,पुनर्मुद्रणं-2012.

For

Queries

Questions

Comments

Suggestions

- Contact:
- Dr.ANIL PRATAP GIRI
- ASSOCIATE PROFESSOR
DEPARETMENT OF SANSKRIT
- MAHATMA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY
MOB.7200526855
- Email:anilpratapgiri@mgcub.ac.in

धन्यवादाः